--- IMG\_7384.txt ---

समर्थ गुरु महात्मा  
श्री रामचंद्रजी की जीवनी  
परमसन्त श्री महात्मा जी ने विक्रमी सम्वत्‌ १६३० तथा  
ईसवी सन्‌ १८७३ में नर शरीर धारण कर कायस्थ वंश को  
सुशोभित किया था आपके पूर्वज भवग्गाँव प्रान्त मैनपुरी के  
रहने वाले थे । शाही जमाने में भवगाँव मय पाँच सौ (गाँव)  
के आपके पूर्व पुरुषाओं को जागीर में मिली थी और चौधरी  
का खिताब भी मिला था, परन्तु समय के हेर फेर से वह सब  
बातें नष्ट हो गई और इनके समय में बची खुची बराय नाम  
एक थोड़ी-सी जमीदारी रह गई ।  
पिता फर्रुखाबाद चुँगी में सुपरिइण्टेण्डैण्ट थे, उस  
समय बड़ी अच्छी स्थिति थी, आपने वहीं रहकर विद्याध्ययन  
किया, पहले मकतब में फारसी फिर गवर्नमेण्ट स्कूल में  
अँग्रेजी पढ़ी | पिता के श्रीरान्त हो जाने पर गृहस्थी का  
बोझ आपके शिर आ पड़ा उसी समय आपने पढ़ना छोड़  
कलक्टरी फर्रुखाबाद में मुलाजमात कर ली और अन्त में  
मुहाफिज दफ्तर के पर से पेन्शन पाई |

--- IMG\_7385.txt ---

[ महात्मा जी की जीवनी और उप ः !  
  
+ रद  
 नअड  
4६5  
  
५ ऊ  
  
आप जन्म से ही कुछ इस प्रकार के संस्कार लेक्रें  
आये थे. भगवद्‌ सम्बन्धी बातों से आपको अधिक रुंचि.थी |  
आप कहा करते थे- “कि हमारी माताजी नित्य-प्रति पूजा+  
के समय रामायाण पाठ किया करती थीं जब हम छोटे थे तो+  
हमको वह बहुत प्रिय लगती और जब तक वह समाप्त नहीं&  
कर देती चुपचाप बैठे रोजाना सुना करते\*थे । और उन्हीं के  
प्रभाव से आज इस अवस्था को . पहुँचे. हैं ,अथवा कोई, कथा  
वार्ता इत्यादि इधर की बातें करता तो हमकों बंहुते प्यारी  
लगती थीं । ५ हल ४  
जाति पांति पूछे ना कोई ॥7- ” #<\*  
हरि को भजै सो हरि का हीई$  
  
वा  
  
परम-सन्त थे, इन महापुरुष का स्थूल शी र  
परन्तु वह दिल से अथवा आत्मा-से मंजहबी हा  
  
से बहुत ऊँचे थे | उनमें मुसलमांन फंकी  
. तरह कट्टरप्रन नहीं था,. उनके' अन्दर  
नीच-ऊँच का ख्याल नंहीं था मनुष्यं- माँ  
दृष्टि से देखने वाले थे वह गीता के इस  
  
ही पक्षपाती थे 'कि:-- पक  
श्रेयान्स्वधर्मो विगुण: परधर्मात्स्वन शा तक  
रह  
  
. स्वधर्म निधन श्रेय: परधर्मो भयाव 3  
  
अर्थ- पराया धर्म, उत्तम और सरल, :ह  
अपेक्षा गुण रहित अपना धर्म अच्छा है.

--- IMG\_7386.txt ---

| | ७॥ | ३ (२५७ ॥0।0 ४५ ॥।३|5 ३ 2॥७।/>2]७ ७४ (५४ [७७०२  
। है (२००४ ।9% (३६ ॥78९ “७ पे ४5 ॥ “२॥॥०३| ॥४ है  
| | >॥0 «।० ३५ ७४४० & ०१२४ १४५ ,२४४,  
| >॥2/0|9 +॥(9 +$० >[3 20+ >2][8 ॥788  
  
| है ॥22 /-|62 4820० (४ + [४ (हे ।$ (२|॥9  
कै [४ #80॥ (५२ है? है।> हैं ॥2/70 सं: पे मं ०६  
ढै।% ७ 2७ है ॥70% ॥08(8-/-/20 %४॥ है ।2600 298)  
॥% ॥॥७।७0॥ | है [डै/: ॥90 [६ ४०३० 29 >०>॥ हे ६/४ है  
  
श। ॥९७॥ (७७४ 2७8 8 ७ (डे ४४ (७ ।9क्ि  
  
कु है ४५ 206 है ९2०४ 2%]॥% (७ ॥8+>है|-०/2४  
  
है. है 8 है जैमिडि 50 फेशडिले के] है शिधिएे  
ि॥ढ ॥फऐ. बिल ० गिरे मेहर कांड कएस॥  
  
| है € (४0 9४४ है [है [६ शिटे।0७ (िएडेड़ें) 2१ ३५  
27 4० ।800 ३२ | मेड ३२०५ 09॥ (७ [0४३ 2९ #ेे  
२५ है ॥2% (४०९ [६७४५ [६ ४३8।०७ |90] (९: है ॥२%  
फैटी [4 कीते कड़े हे? है क कह | +%| (8५% 3९  
(२%९।ह| (२ %॥०0 [8 [००॥०४४१ [६ <| ॥08% ॥ हैक २३]  
| (0 (90 ॥0%2 (#॥ 7०% कि कू| [8% (७ ४७  
हे ७०५ (४८९ 00 | (७ ३४% 680४ [7५% [४ .0० 8४८०  
शिए है (3 खिहि। (मि।०]७॥३०॥४ ० ००॥०-०है| &(/९  
५३7०० | है है॥2७ (हे [॥ (० 3७ 0 [30% |002॥8 3॥ऐ-!४  
  
| ॥8809 208 (७७०॥०७ [४ ० ॥#>डि0

--- IMG\_7387.txt ---

५ | है\*, ० हि धर  
रु हि .  
है कह | - दि मु  
री .  
पर ५ हा ४; - #£ “जी आर हि  
शा है 0. | | ॥2॥54 |  
2 न ९६0  
की 5 भा . ह॒  
पु हि हु \*  
  
| पय मम “० 8॥%8॥४ | [६४ ४३3 2४ [#  
| लिन अरे [कड़े ।२] $० ॥प४े £॥8 [६ ॥७ ३७ ॥0७॥  
  
कक ः (8९|-छि8  
  
|. है 8 20४ ३४ ३५ ॥र89 ३६ 24| 2४६ ३२५  
| + 2॥9%४ 88 मे 20 डे २४ (8 |(७& 208 (२ (8  
| [है।2 (-०॥9/2क१ >20॥8 $ २३॥॥००४ ॥० ॥० ४ ५०७ [है| ६?  
| 46।9/ ०0२ (2॥2॥09॥0 ६ [82% ५०७७ ॥20800:0 4२५  
6 ७80: ॥8 ० 02॥025[9 ४४ ४2 2४ ६  
| | 80 (७॥७ ॥४५५४ ६0॥४ 89 5200 ९५०४ (है [है ४/४४/  
| ५ ॥26|88 ।>]902फ ५९| है डी डेट है (वन्य  
  
>> ४॥४ ॥8  
है ८।। ६ 8४७ ४४ है .2॥ 268 छः सं (४ झा 0  
है. ' ४७ ४४७ है ॥“४४ >% ऐलि हई # है  
  
&

--- IMG\_7388.txt ---

४ ६०४ | 8॥ ॥०४१ (७ 80 ९ ४४ ६७-5४ | (०६४ (४ छह  
॥ ७ /ने ॥0/0॥89 ०६ | (्र0 0/0 € ४४४ ४० ॥प१/४ १ कर  
४ >098 | ४॥५ (४5 0 ५89 ॥2॥० 8॥2९ १]  
७ [६०४ 906:॥ - है? १॥% 0(॥0 ६२४0 42२ २ 229 कह  
8 089 6 २४७३ ।8/8| २० ६१ ४२३५४ ६४६  
  
॥0)(2५ [६ ॥728 $ ५॥8॥) रे 'यें!8 ७-॥/६ डै2 | पर:  
  
.. $ ए५ह फेड़े | % ॥7॥5 28 >५%॥४ ४४0 टै४४ >ेह (8  
  
॥०॥० ५९ है ९8५ ऐ 2॥80६] >%| है (रल्टि है सेल)  
80 | है ॥28 है ॥200९| ॥५2 ।% (३४०२) $ सम  
  
| है (३१६ >% ॥2% ।% >॥0-  
  
७३४ [है (है ॥०0॥8 208 है. ९॥९ 25 ६ [74 ६//६ 28  
  
(डे ७ ६४७४ 206 06 ॥-0 ॥॥०७॥० ऐ ॥० २०-॥४।० (४/२२  
  
(है ९॥१४ ॥)१ (६. ४४ 20९५ (६ | है ॥0 >४ है  
  
[ (8809० 2४ ७-४० (७४० ७९४ ॥9287#

--- IMG\_7389.txt ---

६ [ महात्मा जी की जीवनी और देर  
की हीइनके हदय-नेत्र खुल गये | इनको प्रत्यक्ष ब्रह्म-कूप का क्‍  
विश्व यथार्थ रूप में नृत्य करता हुआ  
  
दर्शन हुआ । सारा जातियों  
इनको दृष्टिगोचर हुआ । सम्पूर्ण दिव्य- लोक  
  
लोकान्तरों में काम करती अनुभव हुईं | द  
  
गुरु बोले-बेटे | होशियार हो जाओ यही दीदार खुदा |  
है यही हिन्दुओं का ब्रह्म-दर्शन है । बस उसी दिन से यह ,  
कृत-कृत्य हो गये, गुरु ने निहाल कर दिया । सच है समर्थ  
और शक्ति सम्पन्न गुरु सब कुछ कर सकते हैं । धीरे-धीरे  
वह और उन्नति करते गये और अन्त में घ्रुव-पद को प्राप्त  
कर गुणातीत हो गये ।  
  
हमारी कहानी  
  
इस घटना के लिखते समय हमको अपनी भी कहानी:  
की सुधि हो आई पाठकों के विनोदार्थ उसको भी लिख!  
देते हैं-  
जिस प्रकार बिना परिश्रम के केवल समीपत्व द्वारा ही क्‍  
दिव्यज्ञान श्रीमान्‌ महात्माजी के गुरु ने कराया था वही ढंग  
इन्होंने भी अपने शिष्यों से बरता। उनके सहतद्ों प्रेमियों में से  
एक भी यह नहीं कह सकेगा कि किसी साधक को उन्होंने  
दा कोई साधन बताया हो अथवा किसी मन््र की दीक्षा  
ही "| उनकी आज्ञा केवल इतनी ही रहती “मिलते जुलते  
पर मुनुशषओ इसी मिलने-मिलाने के समय में ही मौज आ जाने  
और कमी किस कभी किसी स्थान का अनुभव करा दिंया।  
का। इस प्रकार साधन और अभ्यास किये  
  
कली  
|

--- IMG\_7390.txt ---

॥५ 28 ॥6 ॥६३ ॥2/28(६| (है ४ (४ ।+ ।2 /-4/६ ४० (९६2 है  
  
७2/8 (9७-(&४ (५४7० (९॥६ ॥.0७ (४ 2॥230 हेए |5 ४५ है  
  
का] (छ ॥98 ॥6 ४१] (2है|० 2७ ॥0/9 ॥ डिस्क है: हा हु  
(8४ ड्रेक ॥8 002% ॥7॥0 ७ [82 ६२८० (7 ९२ है  
५8 2॥6 ॥6 ॥00% यह ६ रेत िणरे केले हु ट  
  
॥४॥० ॥४०0४ छ ०७ ००६ 2४ ७॥90 ॥2॥08 276/0२-9 है  
॥९| ॥७७ ॥%8 [8-० 80 | है ४१29 -5ीडि॥ को)  
एड 500 ,॥ है [है 20% ।28 (२०5 है ७:०॥० % 2९४ है  
९०७४,, ५९ (७ ९॥९ (॥8 ॥2 7 ९४% ॥- ४ | है| ।747 है  
७॥०७ ३ ० ॥0%॥ /०॥० है 24॥ (8 (३ है।ह>३] (है/ 3 है  
७४५ ६ ३॥॥७३४ 2॥ ॥० 8॥७ | (७ ।200 (०3 है ४०१ है  
[9॥४०॥४ ड्रे(॥ 3/ %| ॥6 ।0% | >॥० [ड्रे।० [9-० ६५ /४-७ हे  
॥०४ एड़ेठ 0 |॥० | है ६४७॥।० 28% [ 7६९] “है 87 हे  
ध ७ ९३ हे (है: 2006 800 2७ 0५ ॥७ (४४ ५ 05७ है  
39 ५ (7०0 0० | है [है।- [६ >/॥0 ।००> ४३ ।०%|०॥६& है  
॥ ६+ 48 ४० 2 0॥० ०0 ६४ 38] ३४७० (है 40 2०४ हे  
  
एशे0 ऐकहे7ि | ॥8 ॥% ४॥।॥४ डे 0४०० ॥0४४ (४७७ ० है  
0898] (6४-७७ ६ ७ ७090 हों; (७ [एप७ ७७]... |  
  
| ० 4३४ ५ ५९॥०/६ [६९०९  
फए ॥6 ॥00% ॥09 [डे 0 [०४२] [गे पढे ६  
92 (७० ॥९०॥5॥8] (हे ऐ (8३ ॥08॥8 %०९ ०७७ ॥-श]  
  
6)  
  
| 8९॥९ है [० ०० [० [4 [0 8 |

--- IMG\_7391.txt ---

[ महात्मा जी की जीवनी और उपदेश |  
  
प्‌  
  
कोई अनुभव ही मुझे आया था यह देख-देख मुझे अपने दिल्ल  
में बड़ी ही कुढ़न होती थी ।  
एक बार गर्मी के दिन थे, मैं आगरे से चलकर ५ बजे क्‍  
न हुंचा सामान रख दिया । वह अभी कचहरी से ,  
नपूतरे से नीचे पड़ी हुई एक खुरैरी चारपाई पर नंगे लेट गये ।  
कि बैठो औः करो । मेरे मन में बहुत विकार थे  
सबसे पीछे जा बैठा | सम्मुख बैठने में डर

--- IMG\_7392.txt ---

है हटतसा जी को जीवनी और उपदेश |  
  
है आनन्द स्वरूप से भास रहा है | बड़ा ही अद्भुत और  
  
। आनन्ददायक दृश्य था। मैं मग्न हो गया । मैंने सुधि-बुधि  
  
डे है इसकी हिफाजत (रक्षा) करना तुम्हारा काम है | देखो !  
  
ईह होशियार रहना यह जाने न पाये ।  
  
| मैं रो पड़ा मैंने विनय किया मेरी सामर्थ्य नहीं है यह भी  
| आप की हो करनी होगी | मुसकरा कर चुप हो रहे। यह सन्तों  
हू की अपार महिमा है वह छिन में राई से पर्वत बना देते हैं।  
आ सुख देवें दुःख को हरें, दूर करें अपराध ।  
  
कहैँ कबीर वह कब मिलें, परम सनेही साध ।।  
  
समानता और सरलता तथा प्रेम और निर्लपता ।  
  
भगवद्गीता कहती है-  
  
| जिस धीर पुरुष को सुख और दुःख एक से मालूम देते  
  
है 5, जिसकी किसी में आसक्ति नहीं है, जो सफलता और  
  
असफलता में एक सा रहता है वही समान भाव वाला  
है उच्चकोटि का योगी है |  
  
/ उपरोक्त सर्व गुण आप में हर समय विद्यमान रहते थे।  
है आप न कभी जोर से हँसते थे और न अधिक रंज करते थे।

--- IMG\_7393.txt ---

उनके लिए चौकी व कालीन बिछा देता तो उसे उठवा देते|

--- IMG\_7394.txt ---

महात्मा जी की जीवनी और उपदेश ] ११  
  
के सम्मुख भी अपने घर की स्थिति तथा आर्थिक दशा को  
आदर्श पुरुष थे | उनमें सम्पूर्ण दिव्य सम्पत्तियाँ मौजूद थीं ।  
निष्काम प्रेम  
  
पहुँच के ऐसा अनुभव करता कि इनसे बढ़ के मेश हितू  
  
जैसा कि आपका चेहरा सलोना और ओज पृ  
वैसा ही आपकी आवाज भी बड़ी सुरीली और मधुर थी वाणी

--- IMG\_7395.txt ---

भी समझ जाता । अभ्यासियों के प्रति उनक  
कि जब कोई उनसे किसी विषय में शंका सर  
  
किसी समय उस पर वहीं दशा प्रत्यक्ष करा दे

--- IMG\_7396.txt ---

क महात्मा जी की जीवनी और उपदेश ॥ १३  
  
फल बुजुर्ग ने अपनी फलाँ किताब में ऐसा लिखा है उसका  
  
की यहीमतलब है” वह सब सुनकर बहुत खुश हुए और प्रशंसा  
आर करने लगे | जनी पण्डितों, आर्यसमाजी और पादरियों से भी  
जा दातचीत होते हुए हमने सुनी थीं, उन्हीं के सिद्धान्तों से अपनी  
  
; बात साबित कर देते थे यह योग्यता थी और इसका कारण  
  
की न हे जब हमारे लिये भी तुम्हारे ऐसे भाव हैं तो आगे.  
हारी गाड़ी कैसे चलेगी ? हटा दो इस ख्याल को |

--- IMG\_7397.txt ---

. १४  
  
में भरा रक्‍्खा है, तो लौट आये लोगों से कहा, नहा डालो  
"हीं जानता । रा है  
विभूतियाँ ५।  
  
हक विभूति डथवा चमत्कारों का कोई सम्बन्ध महत्व सेःआ

--- IMG\_7398.txt ---

महात्मा जी की जीवनी और उपदेश ]  
  
हट  
  
हमसे अथवा हमारे साथियों से है | यदि उनके अनुयाइयों  
  
सकती है, परन्तु उससे जनता का क्या लाभ होगा, इसलिये  
  
दो चार घटनाओं को नीचे लिखकर जीवनी को समाप्त करेंगे  
  
और आगे उनके अमृतमय उपदेशों का वर्णन करेंगे ।  
(१)  
  
सबसे बड़ी विभूति उनमें यह थी कि कोई कैसा भी  
  
सूक्ष्म शरीर द्वारा देश-देशान्तरों में भ्रमण करना, अपने  
प्रेमियों की खबर लेना, संकट आने पर प्रत्यक्ष वा अप्रत्यक्ष  
रूप से उनको बचाना तथा अभ्यास में सहायता देना यह  
नित्यप्रति उनका साधारण नियम था । इसके दा  
दृष्टान्त हैं उनमें से दो तीन आपके मनोरञ्जन के लिये |  
देते हैं |  
| क्‍

--- IMG\_7399.txt ---

| है  
  
कि मैं बेहोश हो गया, स्वॉस रुक गयी घर वाले सब घबड़ा |  
गये । कोई तदबीर काम नहीं देती थी | रात अधिक हों गई ५  
थी, सब अर्द्धननिद्रा में झूम रहे थे, उसी समय मेरी माँ ने ,  
देखा कि श्री महात्मा जी आये हैं और मेरी चारपाई पर बैठ ।  
गये हैं और मुझे एक पुड़िया दवा खिलाई है । उन्होंने सबको १  
,.. खाया और उस दिन से आज तक वर्षों हो गयीं फिर दर्द ॥  
| नहीं हुआ, उसी रात को ठीक उसी समय बाबू होतीलाल ने /  
कहा, कि मुझे भी दर्शन हुए | कुशल पूछी और चलते बने। '  
  
पास जा पहुँचा | वह फौरन उसे ले पैदल हाथ की ् है  
पर चल दिया | हाथ में नीला धागा बाँध दिया था| इसे कुछ -॥

--- IMG\_7400.txt ---

| महात्मा जी की जीवनी और उपदेश ] १७  
  
हैं खबर नहीं थी कि मैं कौन हूँ बस उसके पीछे-पीछे बेहोशी  
ड्र की हालत में चला जा रहा था | रात को जब यह घर नहीं  
पहुँचा तब फिक्र हुई । सोचा कि कहीं अपने मिलने वालों में...  
होगा क्योंकि १५ या १६ वर्ष का था | जब दूसरे दिन भी नहीं  
आया तब तलाश हुई चारों ओर को आदमी भेजे गये परन्तु  
हाथरस की ओर कोई नहीं आया जब कई दिन तलाश करते  
हो गये और पता नहीं चला तब श्री महात्मा जी को लिखा !  
दूसरे दिन वह चिट्ठी पहुँची होगी । जब तक यह हाथरस  
और सादाबाद से गुजर कर आगरे के करीब पहुँच चुका था।  
| उसी रात को न मालूम किस तरह वह बदमाश इसे छोड़  
  
है के भाग गया | इसे कुछ होश हुआ । आगरे पहुँचा । यहाँ  
है इसके बहनोई थे । इनको स्वप्न हुआ कि महात्मा जी कह  
है रहे हें कि सुबह ६ बजे दामोदर आवेगा | वह कई दिन का  
दर स्वप्न पर विश्वास कर इन्होंने ऐसा ही किया । उसी  
कई समय पर दामोदर पहुँचे । पहचान में नहीं आते थे। न पाँव  
हर मेंजूतानशिर पर टोपी | छः दिन के भूखे प्यासे । इन्होंने  
की नहलाया, हलुआ खिलाया फिर सब जगह को तार भेजे ।  
है यहसब उनकी कपाथी |  
  
घटना तीन  
0 जिला फरूुखाबाद में रहते थे । एक दिन किसी काम से.

--- IMG\_7401.txt ---

१८ [ महात्मा जी की जीवनी और उपदेश ४  
  
सोचकर कि रास्ते में घाट पर इनका इक्का मिल जायेगा घर- है  
को चल दिये। घटिया घाट पर नाव में बैठ कर गंगा पार की,“ |  
सवारी कोई नहीं | पैदल ही चले | अभी अलीगंज यहाँ से चार-ा  
कोस है। रास्ते में कई मील गंगा की भयानक कटरी है। मु  
झुटपुटा हो गया था। दो भेड़ियों ने आकर घेर लिया। इनके ;|  
हाथ में छोटा सा डण्डा था। मुकाबिला किया परन्तु दो के ||  
सामने वश नहीं चला। आबादी कोसों नहीं थी। हताश होकर .  
बैठ गये और आँखें बन्द कर कहने लगे- “लो खालो”| उसी .  
समय उन्हे ऐसा अनुभव हुआ कि श्री महात्मा जी महाराज '  
आये हैं और अपने दोनों हाथों से दोनों भेड़ियों का एक-एक ;  
ध \* जाओ। हम खुशी-खुशी घर आये। जब उनसे कहना चाहा ।॥  
  
इन्हीं मुख्तार साहब की लड़की की शादी थी | बारात ॥  
बहुत आ गई जितनी कि आशा न थी। बराती भोजन करने  
के लिये बिठाल दिये गये। सामान थोड़ा था | खत्म हो गया -॥  
खाने वाले माँग रहे हैं। मुख्तार साहब को खबर मिली। ॥  
घबड़ा गये। श्री महात्मा जी मौजूद थे। रोकर पाँव पकड़ ॥  
कपड़े से ढक दो। खोल के मत देखना। और उसमें से |  
बरात खा गई और सामान बच रहा। यह दोनों घटनायें मैंने -!  
  
५

--- IMG\_7402.txt ---

इस प्रकार इस घोर कलियुग में लीला में दिखाते हुए  
  
शिक्षॉप्रद उपदेशों का सारांश आपकी भेंट करते हैं । वह  
महत्वपूर्ण व्याख्यान बहुत बड़े और उर्दू में थे हमने अपनी  
  
अन्त में श्रीगुरुदेव के  
  
चर हमको और आप सबको बुद्धि दें।। ओम्‌ शम्‌ ।